Irshadat e Junaid Bagdadi (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 334
Weekly Booklet : 334

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के
ग्यारहवें पीरो मुर्शिद के फ़रामीन बनाम

# इर्शादाते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़्हात 22

हाथ में तस्बीह़ रखने की वज्ह 04
इ़ल्म के नूर और बरकतों का रुख़्सत होना 05
तसव्वुफ़ क्या है ? 10
तकब्बुर का सब से बड़ा और छोटा दरजा 12



पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# इर्शादाते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْه

**दुआए अमीरे अहले सुन्नत :** या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला : **"इर्शादाते जुनैद बग़दादी"** पढ़ या सुन ले उसे औलियाए किराम की बरकात से हिस्सा अता फ़रमा और उस की मां बाप समेत बिग़ैर हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा दे । اٰمِين بِجاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى الله عليه واٰلِهٖ وَسَلَّم

## हाथ की सूजन दूर हो गई (वाक़िआ)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन अहमद رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं हम्माम (Bathroom) में गया तो गिर गया, दर्द की वज्ह से हाथ सूज गया, (दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते) रात को इसी तक्लीफ़ में सो गया, ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, मैं ने इल्तिजा करते हुए अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! (हालते तक्लीफ़ में) तेरे दुरूद (पढ़ने) ने मुझे बेचैन कर दिया । जब सुब्ह हुई तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से दर्द और सूजन का नामो निशान तक न था । (القول البدیع، ص328 ملتقطاً)

*मुश्किल जो सर पे आ पड़ी तेरे ही नाम से टली मुश्किल कुशा है तेरा नाम तुझ पर दुरूद और सलाम*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## मुख़्तसर तआरुफ़

सिल्सिलए आलिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या के अज़ीम

बुज़ुर्ग, दुन्याए तसव्वुफ़ के रोशन चराग़, अबुल क़ासिम जुनैद बिन मुहम्मद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तीसरी सदी हिजरी के बहुत बड़े वलिय्ये कामिल और अपने वक़्त के इमाम थे। आप के मुबारक इर्शादात इल्मे तसव्वुफ़ के अनमोल हीरे हैं। आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ 27 रजब शरीफ़ को हुवा, اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم आप के उ़र्स मुबारक के मौक़अ़ पर आप की सीरत पर मुश्तमिल रिसाला मन्ज़रे आ़म पर आएगा।

सूफ़िया के सरदार, शरीअ़तो त़रीक़त के इमाम ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मज़ार शरीफ़ उ़रूसुल बिलाद (शहरों की रौनक़) बग़दाद शरीफ़ में है। आप पीराने पीर, ह़ज़रत ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मशाइख़ में से हैं। **अल्लाह** करीम हमें आप के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللهُ عليهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾1﴿ बारगाहे इलाही से ताईद

बहुत बड़े वलिय्ये कामिल, ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब देखा कि गोया मैं **अल्लाह** पाक की बारगाह में ह़ाज़िर हूं। **अल्लाह** पाक ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबुल क़ासिम ! जो बातें तुम लोगों को बयान करते हो कहां से ह़ासिल करते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं सिर्फ़ ह़क़ बात ही कहता हूं।" **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम ने सच कहा।" (الرسالۃ القشیریۃ، ص423)

## ﴾2﴿ अल्लाह पाक की ता'रीफ़

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को यूं दुआ करते सुना गया :

**अल्लाह** पाक के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं, ऐ मेरे मा'बूद ! तेरे लिये इतनी ह़म्द (या'नी ता'रीफ़ें हैं) जितनी तेरे इ़ल्म में हैं। (या'नी ऐ **अल्लाह** पाक! हम तेरी ता'रीफ़ बयान कर ही नहीं सकते, जिस त़रह़ तेरे इ़ल्म की कोई ह़द नहीं ऐसे ही तेरी ता'रीफ़ें भी बेह़द्दो बे शुमार हैं।) (حلیۃ الاولیاء، 10/300)

## ﴿3﴾ अल्लाह के क़रीब होने का ज़रीआ़

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं लोगों के सामने बयान कर रहा हूं, इतने में एक फ़िरिश्ता मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया और कहने लगा : "**अल्लाह** पाक का क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) ह़ासिल करने का बड़ा ज़रीआ़ क्या है ?" मैं ने कहा : "वोह अ़मल जो छुप कर किया गया हो और मीज़ान में पूरा हो।" फ़िरिश्ता येह कहते हुए चला गया कि "**अल्लाह** पाक की क़सम ! येह इल्हामी कलाम है।" (الرسالۃ القشیریۃ، ص421)

(**मदनी फूल : अल्लाह** पाक ने हर इन्सान के दिल पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है जो उसे नेकी की दा'वत देता है, उस फ़िरिश्ते को मुल्हिम और उस की दा'वत को इल्हाम कहते हैं।) (منہاج العابدین، ص47)

## ﴿4﴾ मह़ब्बते इलाही की इन्तिहा

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के नबी, ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام इतना रोए कि बीनाई कम हो गई और इस क़दर क़ियाम फ़रमाया (या'नी खड़े हो कर **अल्लाह** पाक की इ़बादत की) कि कमर में ख़म पड़ गया और इस क़दर नमाज़ पढ़ी कि चलने फिरने की त़ाक़त न रही। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल

की क़सम ! अगर मेरे और तेरे दरमियान आग का समुन्दर होता तो मैं तेरी महब्बतो शौक़ की वज्ह से उस में भी दाख़िल हो जाता। (احیاء العلوم،5/85)

*महब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही*

*रहूं मस्तो बेख़ुद मैं तेरी विला में पिला जाम ऐसा पिला या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علی مُحَمَّد

## ﴾5﴿ हाथ में तस्बीह़ रखने की वज्ह

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ के हाथ में तस्बीह़ देख कर किसी ने अ़र्ज़ की, कि इतने बड़े बुज़ुर्ग बन जाने के बा'द भी आप अपने हाथ में तस्बीह़ रखते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : जिस रास्ते (या'नी तस्बीह़) के ज़रीए मैं **अल्लाह** पाक तक पहुंचा हूं मैं उसे नहीं छोड़ सकता। (المستطرف،1/252)

## ﴾6﴿ सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब

**अल्लाह** पाक तक पहुंचाने वाले तमाम रास्ते हर शख़्स पर बन्द हैं सिवाए उस शख़्स के जो **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करे।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص50)

## तमाम रास्ते बन्द होने का क्या मत़लब है ?

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ के फ़रमान कि **"तमाम रास्ते बन्द हैं"** से मुराद येह है कि ऐसे रास्तों पर चल कर **अल्लाह** पाक तक पहुंचना मुम्किन नहीं क्यूं कि येह रास्ते **अल्लाह** पाक तक नहीं पहुंचा सकते। **अल्लाह** पाक तक पहुंचाने वाले रास्तों पर इसी त़रह़ चले जिस त़रह़ आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़मल फ़रमाया। (حدیقہ ندیہ،1/169)

## ﴾7﴿ इल्म

ह़ज़रते अ़ब्दुल वाहि़द बिन उ़लवान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : ऐ नौ जवान ! इल्म को लाज़िम पकड़ । (حلیۃ الاولیاء، 10/276)

## ﴾8﴿ इल्म के नूर और बरकतों का रुख़्सत होना

इल्मे दीन के तुम पर जो हुक़ूक़ हैं अगर तुम उन्हें पूरा किये बिग़ैर इल्म के ज़रीए इ़ज़्ज़त ह़ासिल करना या ख़ुद को इल्म की त़रफ़ मन्सूब करना या इल्म वाला (या'नी आ़लिम वग़ैरा) कहलवाना चाहोगे तो **"इल्म का नूर"** तुम से ग़ाइब हो जाएगा और तुम पर सिर्फ़ इल्म का निशान बाक़ी रहेगा, येह इल्म तुम्हारे ह़क़ में नहीं बल्कि तुम्हारे ख़िलाफ़ होगा और ऐसा इस लिये है कि बेशक इल्म अपने इस्ति'माल (या'नी अ़मल) की त़रफ़ बुलाता है और अगर इल्म पर अ़मल न किया जाए तो उस की (कई) बरकतें रुख़्सत हो जाती हैं । (حلیۃ الاولیاء، 10/287)

## ﴾9﴿ बे इल्म लोगों के पीछे न चलें

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बे इल्मों को इमाम न बनाने के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया : जिस ने क़ुरआने करीम को याद और ह़दीसे पाक को जम्अ़ न किया उस के पीछे न चला जाए क्यूं कि हमारा इल्म (तसव्वुफ़ व त़रीक़त) क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीमात के साथ ही जुड़ा हुवा है । (الرسالۃ القشیریۃ، ص51)

## ﴾10﴿ ख़िलाफ़े शर्अ़ काम करने वालों को नसीह़त

बे इल्म और ख़िलाफ़े शर्अ़ काम करने वाले फ़क़ीर लोग जो यहां तक कह देते हैं कि शरीअ़त एक रास्ता है और रास्ते की ज़रूरत उन को होती है जो मक़्सद तक न पहुंचे हों, हम तो पहुंच गए। ऐसों के बारे में ह़ज़रते जुनैद

बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : बेशक वोह सच कहते हैं, वोह पहुंच गए मगर कहां ? जहन्नम में। (الیواقیت والجواہر، ص206)

## ﴾11﴿ बादशाहों के ताज से ज़ियादा अच्छी

मा'रिफ़ते इलाही (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान) रखने वालों के लिये "**इबादत**" बादशाहों के सरों पर ताज से ज़ियादा अच्छी है।

(حلیۃ الاولیاء، 10/276)

(जब आ़रिफ़ीन या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाले औलियाए किराम के लिये इबादत का ऐसा मक़ाम है तो जो विलायत व पीरी फ़क़ीरी के झूटे दा'वे करे और मज़ीद फ़राइज़ो वाजिबात में कोताही करे ऐसे शख़्स के साए से भी बचना चाहिये। शरीअ़त में कौन पीर बन सकता है इस के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना से किताब "आदाबे मुर्शिदे कामिल" ह़ासिल कीजिये।)

## ﴾12﴿ निगाहों की ह़िफ़ाज़त का बेहतरीन त़रीक़ा

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में किसी ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे सरदार ! मैं आंखें नीची रखने की आ़दत बनाना चाहता हूं, कोई ऐसी बात इर्शाद फ़रमाइये जिस से मुझे निगाहें नीची रखने पर मदद ह़ासिल हो। आप ने फ़रमाया : येह ज़ेह्न बनाए रखो कि मेरी नज़र किसी दूसरे को देखे इस से पहले "एक देखने वाला (या'नी **अल्लाह** पाक) **मुझे देख रहा है।**"

(احیاء العلوم، 5/129)

سُبْحٰنَ اللهِ ! سُبْحٰنَ اللهِ ! سُبْحٰنَ اللهِ ! मेरे पीरो मुर्शिद, ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने निगाहें नीची रखने का कितना प्यारा त़रीक़ा बयान फ़रमाया है। काश ! हम भी अपनी गिरह से येह बात बांध लें। बे पर्दा औ़रतों

को ताकने, झांकने के वक़्त, तन्हाई में मोबाइल, इन्टरनेट वग़ैरा पर फ़ोहूश मनाज़िर देखने के वक़्त अगर येह तसव्वुर बंध जाए कि "**अल्लाह देख रहा है**" और ख़ौफ़े ख़ुदा ग़ालिब आ जाए तो ख़ुदा की क़सम ! बन्दा थरथर कांपने लगे और गुनाहों से बच जाए। काश ! हमें भी ऐसा ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए जो हमें **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी करने से रोक दे ।

اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم

*छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है*
*अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख ! सर पे तल्वार है क्या होना है*

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 167)

**शर्हे कलामे रज़ा :** मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ऐ नादान बन्दे ! तू लोगों से छुप कर गुनाह करता है, तू डर ! कि **अल्लाह** पाक को तेरे सब कामों की ख़बर है। ऐ गुनाह करने वाले शख़्स ! तू गुनाह करते वक़्त किसी की परवा नहीं करता याद रख ! तेरे सर पर मौत की तल्वार लटक रही है क्या तुझे इस बात का इल्म नहीं कि तू मर जाएगा और तुझे इन गुनाहों की क्या क्या सज़ा दी जाएगी ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

## ﴾13﴿ फ़ुज़ूल कामों में मसरूफ़ होने की अ़लामत

**अल्लाह** पाक के, बन्दे को छोड़ देने की निशानी येह है कि उसे बे फ़ाएदा चीज़ों में मश्ग़ूल कर दे । (المستطرف، 252/1)

## ﴾14﴿ तीन अवक़ात में रह़मत

सूफ़ियाए किराम पर तीन अवक़ात में रह़मत बरस्ती है (जिन में से दो वक़्त येह हैं) : ﴾1﴿ खाने के वक़्त, क्यूं कि येह ह़ज़रात बिग़ैर भूक के नहीं

खाते ताकि खाना खा कर इबादत में मज़ीद कोशिश करें । ﴾2﴿ इल्मी मुज़ाकरे के वक़्त, क्यूं कि येह ह़ज़रात औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के ह़ालात व वाक़िआ़त के इलावा गुफ़्तगू नहीं करते । (احیاء العلوم، 2/334 ماخوذاً)

## ﴾15﴿ अम्बिया, औलिया और सिद्दीक़ीन का त़रीक़ए नेकी की दा'वत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन अ़ली बिन हारून رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़रमाते सुना : याद रखो ! तुम्हारा बन्दों को नसीह़त करना और अपने और उन के मुतअ़ल्लिक़ बेहतर चीज़ (या'नी आख़िरत की तय्यारी) की त़रफ़ मुतवज्जेह होना येह तुम्हारी ज़िन्दगी का अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है और तुम्हारे वक़्त में तुम्हारे रुफ़क़ा (या'नी साथियों) से क़रीब तर करने वाला अ़मल है और येह भी जान लो ! **अल्लाह** पाक के नज़्दीक हर वक़्त, हर ज़माने और हर जगह में सब से अफ़्ज़ल और दरजे में सब से बड़ा वोह है जो ख़ुद पर लाज़िम बातों को बेहतरीन त़रीक़े से अन्जाम देता है, **अल्लाह** पाक की पसन्दीदा चीज़ों की त़रफ़ तेज़ी के साथ आगे बढ़ जाता और फिर **अल्लाह** पाक के बन्दों को सब से ज़ियादा फ़ाएदा पहुंचाता है। तो तुम अपने लिये भरपूर ह़िस्सा ले लो और दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचा कर उन पर शफ़्क़तो मेह्रबानी करने वाले बन जाओ। जान लो ! मा तह़्तों को राहे हिदायत की त़रफ़ ले जाने वाले क़ाबिल लोगों, मख़्लूक़ को फ़ाएदा पहुंचाने वाले लोगों और डराने और ख़ुश ख़बरी देने के लिये तय्यार रहने वालों को त़ाक़त व इक़्तिदार के ज़रीए मदद दी जाती और इल्मे यक़ीन की पुख़्तगी के साथ सआ़दत मन्दी से नवाज़ा जाता

है, उन पर दीनी निशानियों की बारीकियां ज़ाहिर कर दी जातीं और क़ुरआने करीम समझने के लिये उन के ज़ेह्नों को खोल दिया जाता है तो वोह ख़ुद पर किये गए **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल और उस के अ़ज़ीम अम्र तक पहुंच जाते और दिये गए अह़काम को मज़बूत़ी के साथ निभाते हैं, जिस काम पर उन्हें मुक़र्रर किया गया है उस की त़रफ़ जल्दी करते और जिस क़दर मुम्किन हो **अल्लाह** पाक की त़रफ़ बुलाते हैं, अपनी उम्मतों के मुतअ़ल्लिक़ और हुक्मे इलाही की अदाएगी में ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का येही त़रीक़ा रहा और उन की पैरवी करने वाले औलियाए किराम, सिद्दीक़ीने इ़ज़ाम और **अल्लाह** पाक की त़रफ़ बुलाने वाले तमाम नेक लोगों का येही त़रीक़ा है। (حلیۃ الاولیاء، 10/301)

## ﴾16﴿ ज़ोह्द की दो अक़्साम

ज़ोह्द दो त़रह़ का है : ﴾1﴿ ज़ाहिरी ﴾2﴿ बात़िनी। ज़ाहिरी येह है कि इन्सान के पास जो कुछ है वोह उसे पसन्द न करे और जो उस के पास न हो उस की त़लब भी न करे। बात़िनी ज़ोह्द येह है कि दिल से उन चीज़ों की ख़्वाहिश ख़त्म हो जाए और वोह उन की याद से भी दूर हो जाए। जब ऐसा हो जाएगा तो **अल्लाह** पाक उसे आख़िरत देखने और दिल से उस की जानिब मुतवज्जेह होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा देता है। उस वक़्त बन्दा मौत को क़रीब जानता और मग़्फ़िरत की उम्मीद कम होने के बाइ़स नेक आ'माल में ख़ूब कोशिश करता है क्यूं कि उस के दिल से अस्बाब दूर हो चुके होते हैं और उस का दिल सिर्फ़ आख़िरत के मुआ़मले में मश्ग़ूल होता है इस त़रह़ ज़ोह्द की ह़क़ीक़त उस के दिल तक पहुंच जाती है और वोह अपने रब्बे करीम के ख़ालिस ज़िक्र से भर जाता है। (قوت القلوب، 2/535)

## ﴾17﴿ अहम काम का दरवाज़ा

हर शानो शौकत वाले अहम काम का दरवाज़ा "**मेहनत**" से खुलता है। (حلیۃ الاولیاء، 10/296)

## ﴾18﴿ तसव्वुफ़ क्या है ?

हम ने तसव्वुफ़ सिर्फ़ क़ीलो क़ाल (या'नी बातों) से हासिल नहीं किया बल्कि भूक, दुन्या को छोड़ने, मन पसन्द और प्यारी चीज़ों को क़ुरबान कर के हासिल किया है क्यूं कि तसव्वुफ़ **अल्लाह** पाक के साथ अपने मुआमले को साफ़ सुथरा रखने का नाम है और इस की अस्ल दुन्या से कनारा कशी है। जैसा कि सहाबिये रसूल हज़रते हारिसा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : मेरा नफ़्स दुन्या से कनारा कश हो गया तो मैं ने रातों को क़ियाम किया और दिन में रोज़ा रखा। (حلیۃ الاولیاء، 10/296)

*हिर्से दुन्या निकाल दे दिल से बस रहूं तालिबे रिज़ा या रब*
*दिल का उजड़ा चमन हो फिर आबाद कोई ऐसी हवा चला या रब*

(वसाइले बख़्शिश, स. 81)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## ﴾19﴿ इख़्लास का आ'ला दरजा

इख़्लास **अल्लाह** पाक और बन्दे के दरमियान एक राज़ है, जिस का फ़िरिश्ते को भी इल्म नहीं होता, शैतान भी इसे नहीं जानता कि इस अमल में ख़राबी पैदा करे और नफ़्सानी ख़्वाहिशात भी उस से बे ख़बर रहती हैं कि उसे अपनी तरफ़ माइल करें। (الرسالۃ القشیریۃ، ص244)

एक और मक़ाम पर आप ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** पाक दिलों के साथ उसी क़दर भलाई फ़रमाता है जिस क़दर दिल उस के ज़िक्र

में मुख़्लिस होते हैं तो देख लो कि तुम्हारे दिल के साथ क्या मिला हुवा है।

(حلیۃ الاولیاء، 10/297)

**अल्लाह** पाक की बारगाह में बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़र्ज़ करते हैं :

*अ़त़ा कर दे इ़ख़्लास की मुझ को ने'मत न नज़्दीक आए रिया या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## ﴾20﴿ दुन्या क्या है ?

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा गया : दुन्या क्या है ? फ़रमाया : जो दिल से क़रीब हो कर **अल्लाह** पाक से ग़ाफ़िल कर दे।

(حلیۃ الاولیاء، 10/292)

## ﴾21﴿ दुन्या आज़्माइश का घर है

इस जहान से जो कुछ भी मुझे पेश आता है वोह मुझे बुरा नहीं लगता क्यूं कि मैं ने एक उसूल बना लिया है और वोह येह कि दुन्या दुख, ग़म, मुसीबत और आज़्माइश का घर है और अगर मुझे हर वोह चीज़ पहुंचे जो मुझे पसन्द है तो येह फ़ज़्लो करम है वरना अस्ल तो पहली चीज़ ही है।

(حلیۃ الاولیاء، 10/288)

## ﴾22﴿ क़नाअ़त किसे कहते हैं ?

फ़िल वक़्त जो कुछ तुम्हारे पास है तुम्हारा इरादा उस से आगे न बढ़े (या'नी ज़ियादा की तमन्ना न हो)। (حلیۃ الاولیاء، 10/281)

## ﴾23﴿ शुक्र की ह़क़ीक़त

**अल्लाह** पाक की किसी भी ने'मत से उस की ना फ़रमानियों पर मदद न ली जाए। (حلیۃ الاولیاء، 10/286)

## ﴾24﴿ गुफ़्तगू में एह़तियात़

गुफ़्तगू में तक़्वा व परहेज़ गारी का होना अ़मली तक़्वा व परहेज़ गारी से ज़ियादा सख़्त है। (حلیۃ الاولیاء، 10/287)

## ﴾25﴿ मानूस मत होना

अपने नफ़्स से (इस के धोकों की वज्ह से) मानूस मत होना अगर्चे येह **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी में हमेशा तुम्हारा साथ दे।

(حلیۃ الاولیاء، 10/287)

## ﴾26﴿ अदब की दो क़िस्में

अदब की दो अक़्साम हैं : (1) छुपा अदब और (2) ज़ाहिरी अदब, छुपा हुवा अदब दिलों का पाको साफ़ होना है, जब कि ए'लानिया अदब अपने आ'ज़ा (या'नी हाथ, आंख, कान, पाउं वग़ैरा) को गुनाहों से बचाना है।

(المستطرف، 1/252)

## ﴾27﴿ करमे इलाही का सुवाल है

**अल्लाह** पाक की एक नज़रे करम अगर गुनहगार पर पड़ जाए तो वोह नेक बन जाता है। (حلیۃ الاولیاء، 10/285)

## ﴾28﴿ तकब्बुर का सब से बड़ा और छोटा दरजा

बुराई के ए'तिबार से तकब्बुर का सब से बदतर दरजा येह है कि तू ख़ुद को सब कुछ समझे और इस से कम दरजा येह है कि तेरे दिल में इस का ख़याल गुज़रे। (या'नी अपने आप को सब से बेहतर समझना तकब्बुर की बुरी तरीन सिफ़त है जब कि इस का ख़याल आना भी बुरा है।) (حلیۃ الاولیاء، 10/292)

## ﴾29﴿ नसीह़तों भरा मदनी गुलदस्ता

ह़ज़रते अ़ली बिन हारून बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं कि ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने एक दोस्त को इस मज़्मून का ख़त़ लिखा : बेशक **अल्लाह** पाक ज़मीन को अपने औलियाए किराम से ख़ाली नहीं रहने देता और न अपने पसन्दीदा बन्दों से ज़मीन को मह़रूम करता है ताकि **अल्लाह** पाक उन के ज़रीए़ मख़्लूक़ की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को मख़्लूक़ की ह़िफ़ाज़त व निगह़बानी का ज़रीआ़ बनाया और उन्हें अपने होने की दलील बनाया। और मैं फ़ज़्लो मेह्‌रबानी के साथ बड़ा एह़सान फ़रमाने वाले से सुवाल करता हूं कि वोह हमें और आप को उन (या'नी औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) में शामिल फ़रमा दे जो उस के राज़ के अमानत दार और उस के अम्रे अ़ज़ीम की ह़िफ़ाज़त करने वाले हैं, **अल्लाह** पाक का मुबारक त़रीक़ा येही है कि उस ने अपनी इतनी बड़ी वसीओ़ अ़रीज़ सल्त़नत को अपने दोस्तों से सजाया है और उन्हें ज़मीन में **सब से ज़ियादा चमक्ने** वाला बनाया है जिन से उस का नूर फैलता और **अल्लाह** पाक की पहचान वालों के दिलों से उस का ज़ुहूर दिखाई देता है और येह हस्तियां सितारों की रोशनी और सूरज, चांद के नूर से चमक्ने वाले आस्मान से ज़ियादा ख़ूब सूरत हैं, येह मुबारक हस्तियां **अल्लाह** पाक तक पहुंचाने वाले रास्तों और उस के फ़रमां बरदारों की राहों की निशानियां हैं, इन ह़ज़रात की निशानी मख़्लूक़ को फ़ाएदा पहुंचाने में सब से बढ़ कर है और मख़्लूक़ से नुक़्सान दूर करने में इन ह़ज़रात की ख़ैरो भलाई उन सितारों से ज़ियादा वाज़ेह़ है जिन से ख़ुश्की व तरी के

अंधेरों में और रास्तों से भटक जाने की सूरत में राहनुमाई ली जाती है क्यूं कि सितारों की राहनुमाई से मालों और जानों को नजात मिलती और उ़लमाए किराम की राहनुमाई से दीन की सलामती नसीब होती है, अपना दीन सलामत रखने में काम्याब होने वाले और अपनी जान, माल सलामत रखने में काम्याब होने वाले में बड़ा फ़र्क़ है। (حلیۃ الاولیاء، 10/298)

## ﴾30﴿ ज़िन्दगी का लुत्फ़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुबैश رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ से "रिज़ा" (या'नी **अल्लाह** पाक के फ़ैसले पर हर ह़ाल में राज़ी रहने) के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा तो आप ने फ़रमाया : तुम ने तो पुर लुत्फ़ ज़िन्दगी और आंखों की ठन्डक के मुतअ़ल्लिक़ पूछा है कि कौन **अल्लाह** पाक से राज़ी है ? बा'ज़ उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : सब से पुर लुत्फ़ और मज़े वाली ज़िन्दगी **अल्लाह** करीम से राज़ी रहने वालों की है। रिज़ा येह है कि जो मुसीबत आ चुकी उस का ख़ुशी से इस्तिक़्बाल किया जाए और जो नहीं आई उस का इन्तिज़ार ग़ौरो फ़िक्र करते हुए और उसे अहम्मिय्यत देते हुए किया जाए क्यूं कि **अल्लाह** पाक बन्दे के साथ बेहतरीन मुआ़मला फ़रमाता है, वोही उस पर सब से ज़ियादा रह़्म करने वाला और वोही उस के फ़ाएदे को सब से बेहतर जानता है, फिर जब **अल्लाह** पाक का कोई फ़ैसला आ जाए तो बन्दा उसे ना पसन्द न करे क्यूं कि येही **अल्लाह** पाक का इरादा था, अपने रब्बे करीम के काम को अच्छा जाने पस अगर बन्दा **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से आने वाली मुसीबत को **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से अच्छा मुआ़मला समझे

तो वोह राज़ी हो गया। अल ग़रज़ रिज़ा वोह इरादा है जो पसन्दीदगी के साथ हो, यूं कि बन्दा उसी चीज़ को चाहने वाला हो जाए जो **अल्लाह** पाक ने किया और दिल से **अल्लाह** करीम से महब्बत करने वाला और उस से राज़ी रहने वाला बन जाए। (حلیۃ الاولیاء، 10/298)

*करना रहमत ख़ुदा मुझ पे अपनी रख इनायत सदा मुझ पे अपनी*
*दाइमी और हत्मी रिज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे*

(वसाइले बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

## ﴾31﴿ एक ख़ूब सूरत दुआ

हज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सख़्त दिनों में यूं दुआ किया करते थे : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं, उस के लिये हमेशगी, बहुत ज़ियादा पाकीज़ा व बरकतों वाली ता'रीफ़ है जो कभी ख़त्म न होगी, ऐसी ता'रीफ़ जो तेरी करीम ज़ात और अ़ज़मतो शान के लाइक़ हो। हर पाकी, बुज़ुर्गी, बुलन्दी और ता'रीफ़ तेरे ही लिये है और हर अच्छी, साफ़ सुथरी और ख़ूब सूरत बात जो तुझे पसन्द है वोह तेरे लिये है।

ऐ मेरे परवर्दगार ! तेरे चुने हुए मुख़्तार व मुबारक ख़ास बन्दे, हमारे मौला हमारे सरदार, हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, तमाम सहाबए किराम और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूद नाज़िल फ़रमा।

ऐ मेरे **अल्लाह** पाक ! ज़मीनो आस्मान में अपनी फ़रमां बरदारी करने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमा, हज़रते जिब्राईल, मीकाईल, इसराफ़ील, इ़ज़राईल, जन्नत के निगरान हज़रते रिज़्वान और दारोग़ए जहन्नम (या'नी दोज़ख़ के निगरान फ़िरिश्ते) हज़रते मालिक عَلَيْهِمُ السَّلَام पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

ऐ मेरे **अल्लाह** पाक ! अपने तमाम फ़िरिश्तों, ज़मीनो आस्मान के रहने वालों और तेरी काएनात में तेरे इल्म के मुताबिक़ जहां भी कोई रहता है सब पर ऐसी रह़मत नाज़िल फ़रमा जिस में तेरी रिज़ा हो, तुझे पसन्द हो और जिस रह़मत के येह सब ह़क़दार हैं ।

ऐ मेरे **अल्लाह** पाक ! अ़र्श को बुलन्दी देने वाली तेरी अ़ज़ीम रबूबिय्यत के तुफ़ैल मैं तुझ से तेरे जूदो करम, फ़ज़्लो एह़सान, पसन्द व अ़त़ा, नेकी व भलाई और मेह्रबानी का सुवाल करता हूं । ऐ बहुत अ़त़ा फ़रमाने वाले ! करम फ़रमाने वाले ! तेरे इल्म में मेरे जितने भी गुनाह हैं मैं तुझ से उन की मुआ़फ़ी त़लब करता और हमारी तमाम ख़त़ाओं से दर गुज़र का सुवाल करता हूं । ऐ मेरे परवर्दगार ! अपना जूदो करम और मेह्रबानी व अ़त़ा करते हुए हम पर लाज़िम हुक़ूक़ की अदाएगी में हमारी मदद फ़रमा, हमारे अन्जाम सीधे रख और हमारी बुराई को अच्छाई से बदल दे । ऐ वोह ज़ात जो, जो चाहे मिटाए और जो चाहे साबित रखे और अस्ल लिखा उसी के पास है । तू जैसा है वैसा कोई और नहीं हो सकता, मरने तक जो हमारी ज़िन्दगी बाक़ी है, हमें उस में गुनाहों से मुकम्मल व हमेशा मह़फ़ूज़ रखना, हर वोह चीज़ जो तुझे ना पसन्द है वोह हमारे लिये ना पसन्दीदा कर दे और हर वोह चीज़ जो तुझे प्यारी व मह़बूब है वोह हमारे लिये भी मह़बूब कर दे और हमें उस के साथ अपनी पसन्दीदा सम्त में चला, हमारे लिये इसे मौत तक बाक़ी रख, हमारे इरादों को इस पर पक्का फ़रमा और हमारी निय्यतों को इस पर मज़बूत़ कर, इस के लिये हमारी तन्हाइयों की इस्लाह़ फ़रमा, हमारे आ'ज़ा को इस पर अ़मल में लगा दे और हमें तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इज़ाफ़ा व किफ़ायत से नवाज़ दे ।

ऐ मेरे **अल्लाह** पाक! हमें अपनी हैबतो ता'ज़ीम और अपना ख़ौफ़ अ़ता फ़रमा, तुझ से ह़या करने, अच्छी कोशिश करने और तेरी ता'रीफ़ पर मुश्तमिल हर पाकीज़ा बात की जानिब जल्दी व तेज़ी करने वाला बना। ऐ मेरे **अल्लाह** पाक! हमें अपने चुने हुए बन्दों, दोस्तों और फ़रमां बरदारों की त़रह़ हमेशा वाला ज़िक्र और ख़ालिस अ़मल करने वाला बना ऐसा कि वोह कामिल तरीन, मुस्तक़िल, सुथरा और तुझे बहुत पसन्द हो और जब तक जियें उस अ़मल पर हमारी मदद फ़रमा।

ऐ मेरे **अल्लाह** पाक! जब हमें मौत आए तो हमारी मौत को बा बरकत बनाना और उस दिन को मह़ब्बतो बुज़ुर्गी, क़ुर्बो सुरूर और रश्क वाला दिन बनाना, नदामत व मायूसी वाला दिन न बनाना, हमें हमारी क़ब्रों में सुरूर व ख़ुशी और आंखों की ठन्डक पर उतारना और क़ब्र को अपनी जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़, इ़ज़्ज़तो मेह्रबानी और रह़मत की जगह बना देना, हमें क़ब्र में जवाबात सिखा देना और क़ब्र की घबराहटों से बचा लेना।

ऐ **अल्लाह** पाक! जब तू हमें क़ब्रों से उठाए तो अम्नो इत्मीनान के साथ उठाना, ऐ लोगों को उस दिन जम्अ़ फ़रमाने वाले! जिस दिन के वाक़ेअ़ होने में कोई शक नहीं, उस दिन में हमें भी कोई शुबा नहीं। तू हमें उस की घबराहटों से मह़फ़ूज़ रखना, उस की सख़्तियों से जुदा रखना, उस के बड़े ग़म से बचाना, उस की सख़्त प्यास में सैराब करना और हमारा ह़श्र प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गिरौह में फ़रमाना, वोह करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन को तू ने चुना और जिन्हें तू ने अपने दोस्तों की शफ़ाअ़त करने वाला बनाया, जिन को अपने तमाम पसन्दीदा बन्दों पर मुक़द्दम रखा है, वोह जिन के गिरौह को तू सख़्तियों से बचाएगा।

ऐ **अल्लाह** पाक ! तू हमारा हिसाब आसान लेना जिस में कोई झिड़क्ना और तफ़्सील न हो । हमारे साथ अपने जूदो करम का मुआ़मला फ़रमाना, हमें जल्द नजात पाने वाला क़ाबिले रश्क लोगों में से बनाना, हमारे आ'माल नामे हमारे सीधे हाथ में अ़ता फ़रमाना, हमें पुल सिरात़ से तेज़ी के साथ पार लगा देना, मीज़ान पर हमारे नेक आ'माल को भारी कर देना, हमें दोज़ख़ का जोश और चिंघाड़ न सुनाना और हमें उस से और हर उस बात और काम से बचाना जो दोज़ख़ के क़रीब करते हैं ।

ऐ **अल्लाह** पाक ! हमें अपने जूदो करम और अ़ता के तुफ़ैल अपने इ़ज़्ज़तो सुरूर वाले घर जन्नत में उन लोगों का साथ अ़ता फ़रमा जिन पर तू ने इन्आ़म फ़रमाया या'नी ह़ज़राते अम्बियाए किराम, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं । हमें अपने अ़ज़मतो राह़त वाले घर जन्नत में हमारे आबाओ अज्दाद, माओं, रिश्तेदारों और औलाद के साथ बेहतरीन और ख़ुशह़ाली वाली ह़ालत में जम्अ़ फ़रमा । हमें हम से उल्फ़तो मह़ब्बत रखने वाले मुसल्मान भाइयों से मिला देना ।

ऐ **अल्लाह** पाक ! तमाम मोमिनीनो मोमिनात पर अपनी मेह़रबानी और रह़मत को आ़म फ़रमा, वोह जो तुझे एक मानते हुए दुन्या से रुख़्सत हो गए, तू हमारा और उन का मददगार, निगह़बान और किफ़ायत करने वाला बन जा । उन के नामए आ'माल बन्द हो गए, आ'माल रुक गए और वोह जिस आज़्माइश में हैं तो उन मर्ह़ूमीन पर रह़्म फ़रमा और उन में से जो ज़िन्दा हैं अगर गुनाहगार हैं तो तू उन को तौबा की तौफ़ीक़ दे, उन की तौबा क़बूल फ़रमा, जो ज़ालिम हैं उन्हें मुआ़फ़ कर दे और मज़्लूम की मदद

फ़रमा, जो मरीज़ हैं उन को शिफ़ा अ़ता फ़रमा, हमें और उन्हें ऐसी सच्ची तौबा करने वाला बना जो तुझे पसन्द है, बेशक तू इस की सख़ावत करने वाला, इसे उ़म्दा व बेहतर करने वाला और इस पर क़ादिर है।

ऐ **अल्लाह**! उन ज़िम्मेदारों की और उन्हें जिन पर तू ने ज़िम्मेदार बनाया है उन सब की इस्लाह़ फ़रमा और उन्हें अपने मा तहूतों के साथ शफ़्क़तो मेह्रबानी और रह़मत भरा सुलूक करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, नीज़ हमें और उन्हें इस पर क़ाइम रख।

ऐ **अल्लाह** पाक! हमें सच्ची बात पर जम्अ़ फ़रमा, हमारी जानों की ह़िफ़ाज़त फ़रमा, हम से फ़ितने को दूर फ़रमा और हमें तमाम बलाओं से बचा और अपने फ़ज़्ल से हमारे लिये इन सब चीज़ों को अपने ज़िम्मए करम पर ले ले कि तू ही इसे सब से बेहतर जानता है और सब से ज़ियादा इस पर क़ादिर है। हमें मुसल्मानों में बाहमी लड़ाई और इख़्तिलाफ़ न दिखा।

ऐ **अल्लाह** पाक! हम तुझ से सुवाल करते हैं कि तू हमें इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा, ज़िल्लत में मुब्तला न फ़रमा, बुलन्दी से नवाज़, पस्ती में न डाल, हमारी ह़िमायत फ़रमा, हमारे लिये तमाम उमूर का रास्ता इकठ्ठा कर दे, दुन्या के उमूर हमें तेरी इत़ाअ़त तक पहुंचाते और तेरे हुक्म की बजा आवरी में हमारी मदद करते हैं जब कि आख़िरत के उमूर में हमारी रग़बत सब से ज़ियादा है, उन पर हमारा ए'तिमाद है और उन ही की त़रफ़ हम लौटने वाले हैं। बिला शुबा येह मुआ़मला तेरी मदद से ही हमारे लिये पूरा होगा और तेरी तौफ़ीक़ ही से हमारे लिये दुरुस्त होगा।

ऐ **अल्लाह** पाक ! तेरे ही लिये हर शै की बादशाहत है, तू हर चीज़ पर क़ादिर है । ऐ **अल्लाह** पाक ! हमारे जिस्मों और तमाम ह़ालात में हमें कामिल आ़फ़ियत अ़त़ा फ़रमा और हमारे तमाम दोस्तों, औलाद और रिश्तेदारों को भी पूरी आ़फ़ियत अ़त़ा फ़रमा और इसे तमाम मोमिनो मोमिनात के लिये आ़म कर दे और हम पर अपने पसन्दीदा और मह़बूब तरीन अह़काम जारी फ़रमा और वोह कि जो क़ुर्ब दिलाने वाले हर क़ौल व अ़मल में हमारे ज़ियादा मुआ़विन हों । ऐ आवाज़ों को सुनने वाले ! ऐ छुपी चीज़ों को जानने वाले ! और ऐ आस्मानों के ह़ाकिम ! अपने ख़ास बन्दे ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की आल पर अव्वलो आख़िर, ज़ाहिरो बात़िन दुरूद नाज़िल फ़रमा, हमारी दुआ़ क़बूल फ़रमा और हमारे साथ अपनी शान के मुत़ाबिक़ मुआ़मला फ़रमा । ऐ सब मेह्रबानों से ज़ियादा मेह्रबान और ऐ सब रह़्म करने वालों से बढ़ कर रह़्म करने वाले ! (حلیۃ الاولیاء، 10/302)

*हाथ उठते ही बर आए हर मुद्दआ़ वोह दुआ़ओं में मौला असर चाहिये*

(वसाइले बख़्शिश, स. 513)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

## अगले हफ़्ते का रिसाला

Faizan e Gareeb Nawaz (Hindi)
फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी